संत कविभारती

कबीरदास

T-1

प्रस्तावना:-

बच्चों, हिंदी साहित्य का बड़ा ही विस्तृत तथा समृध्द इतिहास है | सूरदास, तुलसीदास, और कबीरदास जी के बिना इस इतिहास का पूर्ण होना असंभव है | इन तीनों साहित्य शिरोमणियों हिंदी साहित्य को अपने-अपने तरीके से समृध्द बनाया |

सूरदास ब्रज भाषा में लिखते थे, तथा वे श्रीकृष्ण के भक्त थे | तुलसीदास जी अवधी भाषा में लिखते थे तथा उनका वर्ण्य विषय श्रीराम था | ये दोनों ही सगुण भक्ति के उपासक थे |

कबीरदास किसी देवता विशेष के उपासक नहीं थे | वे निर्गुण उपासक थे | आज हम उन्हीं द्वारा रचित कुछ दोहें पढने वाले हैं |

आईए पहले हम कबीरदास जी के बारे में जान लें....

T-2

कबीरदास जी का परिचय

कबीर एक ऐसी शख्सीयत जिसने कभी शास्त्र नहीं पढा फिर भी ज्ञानियों की श्रेणीं में सर्वोपरी। कबीर, एक ऐसा नाम जिसे फकीर भी कह सकते हैं और समाज सुधारक भी ।

मित्रों, कबीर भले ही छोटा सा एक नाम हो पर ये भारत की वो आत्मा है जिसने रूढियों और कर्मकाडों से मुक्त भारत की रचना की है। कबीर वो पहचान है जिन्होने, जाति-वर्ग की दिवार को गिराकर एक अद्भुत संसार की कल्पना की। कबीर का व्यक्तित्व अनुकरणीय है। वे हर तरह

की कुरीतियों का विरोध करते हैं। वे साधु-संतो और सूफी-फकीरों की संगत तो करते हैं लेकिन धर्म के ठेकेदारों से दूर रहते हैं।

T-3

कबीरदास जी की भाषा तथा ग्रन्थ संपदा

कबीर घुमक्ङ संत थे अतः उनकी भाषा सधुक्कङी कहलाती है। कबीर की वाणी बहुरंगी है। कबीर ने किसी ग्रन्थ की रचना नही की। अपने को कवि घोषित करना उनका उद्देश्य भी न था। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों का संकलन किया जो 'बीजक' नाम से जाना जाता है। इस ग्रन्थ के तीन भाग हैं, 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी'। कबीर के उपदेशों में जीवन की दार्शनिकता की झलक दिखती है। गुरू-महिमा, ईश्वर महिमा, सतसंग महिमा और माया का फेर आदि का सुन्दर वर्णन मिलता है। कबीर का मूल मंत्र था,

"मैं कहता आँखन देखी, तू कहता कागद की लेखिन"।

T-4

जिन दोहों का संकलन पाठ्यपुस्तक में है वे दोहे "अहंकार" से संबंधित हैं | कबीर जी के अनुसार हममें प्रेम और समर्पण की भावना होनी चाहिए तभी हम ईश्वर को प्राप्त कर सकतें हैं | प्रेम की महती बताते हुए कबीर जी कहते हैं-

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

अर्थ : बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुँच गए, पर सभी विद्वान न हो सके. कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा.

T-5

जब मैं था तब हरि नाँहि, अब हरि हैं मैं नाँहि |

प्रेमगली अति साँकरी, यामें दो न समाँहि ||

अर्थ:- कबीर जी कहते हैं कि जब मैं था तब हरी अर्थात भगवान नहीं था और जब भगवान है, तब मैं नहीं हूँ | यह प्रेम रूपी गली इतनी छोटी है कि उसमें एक साथ दो लोग आ ही नहीं सकते हैं |

यहाँ पर “मैं” का अर्थ “अहंकार” है | भक्ति में अहंकार का कोई महत्व नहीं होता है, क्योंकि अहंकार अपने साथ तमो गुणों को लाता है, अहंकार के कारण हमारे मन से समर्पण की भावना खत्म हो जाती है और अधिकार की भावना घर करने लगती है | और जहाँ प्रेम और समर्पण नहीं वहाँ भगवान का वास्तव्य कैसे हो सकता है ?

“मैं भगवान का सबसे बड़ा भक्त हूँ |” ऐसा सोचना भी अहंकार ही है | और जहाँ अहंकार है वहाँ भगवान नहीं रह सकते हैं |

प्रेम की गली इतनी छोटी और तंग है कि उसमें एक समय एक ही व्यक्ति जा सकता है | प्रेम रूपी गली को संकीर्ण बता कर कबीर भगवान से एकरूपता की बात करतें हैं | जब हम भगवान के अस्तित्व में विलीन हो जाएंगें अपना अहंकार छोड़ कर तभी ईश्वर को प्राप्त कर पाएगें|

समय की मांग के अनुसार कबीर जी ने कुछ दोहों की रचना की, अपने दोहों के जरिए उन्होंने कुछ विचार समाज के सामने रखे | उस समय समाज में विविध धर्मों के साथ भक्ति की कई शाखाएँ उपस्थित थीं | जैसे भक्ति में ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी या सूफी आख्यान आदि | इन सबको

देखकर, इनमें उपस्थित स्पर्धा या ईर्ष्या के कारण निर्गुण शाखा के प्रतिनिधि कबीर जी अस्वस्थ हुए और उन्होंनेसमर्पण तथा अद्वैत की भावना का पुरस्कार किया | जो व्यक्ति अहंकार को छोड़ प्रेम का स्वीकार करता है तब वह समाज का एक हिस्सा बनकर रहता है, खुद को अलग महसूस नहीं करता, इसी एकता की भावना में समाज का हित होता है | यही बात समझाने के लिए कबीर प्रेम की गली का उदाहरण देते हैं | उनकी राय से प्रेम की जिस गली से हमें गुजरना है, वह बहुत संकरी है , जहां से दो लीग एक साथ नहीं जा सकते उन्हें एक होकर जाना पड़ता है, यही अद्वैत है | एक दूसरे के प्रति प्यार को बढाने के लिए इसी बात को समझना पड़ता है |

T-6

कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नांहि |

सीस उतारै हाथ सौ, तब पैठे घर मांहि ||

अर्थ:- अपने दूसरे दोहे में कबीर मानो भक्त को धमका रहें हैं | कबीर कहतें हैं कि यह भगवान का घर है,उसका मंदिर है, यह प्रेम का मंदिर है | ना कि तुम्हारी मौसी का घर है | जहाँ हम अपनी मन मर्जी करतें हैं | अगर तुम्हें अंदर आना है तो अपने सिर को हथेली पर रख कर आना होगा |

अक्सर हम अपने रिश्तेदारों के घर एक प्रकार की ऐंठ लेकर जाते हैं | हम अपने-आप को महान समझते हैं | अपने रिश्तेदारों में अपनी अकड़ दिखाना हमें अच्छा लगता है | हम अक्सर अपने-आप को उनसे अलग जताने की कोशिश करतें हैं |

पर कबीर कहतें हैं कि अगर तुम्हें भगवान के पास आना है तो तुम्हें अपनी अकड़ अपना अहंकार बाहर ही छोडकर आना होगा, तुम्हें नम्र होकर आना होगा | तभी तुम इस घर में प्रवेश कर पाओगे |

कबीर जी के अनुसार हमें भगवान के पास आते समय ना सिर्फ निराभिमानी होकर आना होगा अपितु हमारा सबकुछ भगवान पर न्यौछावर करने की ताकद हममें होनी चाहिए | “हाथ पर सिर लेना ....” इसका तात्पर्य है कि हम त्याग से ही भगवान को पा सकते हैं |

T-7

प्रेम न बारी ऊपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ |

राजा प्रजा जेहि रूचै, सीस देइ लै जाइ ||

अर्थ- प्रेम के बारे में बताते हुए कबीर कहतें हैं कि प्रेम खेत में नहीं उगता है, प्रेम बाज़ार में भी नहीं बिकता है |यह तो हमारे मन में उत्पन्न होता है | प्रेम कोई भेद-भाव नहीं करता है, चाहे राजा हो या प्रजा वह सभी को समान रूप से मिलता है | प्रेम को प्राप्त करने के लिए बस एक ही वस्तु की आवश्यकता होती है और वह है हमारा सिर ! हमें हमारा सिर काट कर प्रेम का मोल चुकाना पड़ता है |

खेत में अनाज उगता है जिसे भी देखभाल की जरूरत होती है | बाज़ार से खरीदारी करने के लिए जरूरत होती है योग्य मूल्य चुकाने की | प्रेम के लिए इन दोनों बातों की आवश्यकता होती है- देखभाल और योग्य मूल्य | निराभिमानी व्यक्ति ही यह मोल चुका पाता है क्योंकि पूर्ण रूप से समर्पित होता है |

अर्थात प्रेम को प्राप्त करना खेत में अनाज को उगाना या बाज़ार से सामान लाने इतना आसन नहीं है | प्रेम को प्राप्त करने के लिए शारीरिक कष्टों की अपेक्षा हमारी प्रवृत्ति में बदलाव की अपेक्षा होती है |

पुनः इस दोहे में कबीर “सिर” का प्रतीकात्मक रूप से इस्तमाल करतें हैं | सिर का अर्थ यहाँ पर भी “अहंकार” ऐसा ही है |

कबीर कहतें हैं कि जब तक हम अपने अहंकार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो जाते तब तक हमें प्रेम नहीं मिलता | प्रेम कभी भी छोटे-बड़े, अमीर-गरीब का भेद-भाव नहीं करता है | उसके लिए सभी समान है | प्रेम सिर्फ एक ही भावना को देखता है और वह भावना है त्याग और समर्पण की भावना!

जब तक हम अपना अहंकार छोडकर उस परमात्मा की पास नहीं जाते तब तक वह हमें अपनाता नहीं है |

T-8

उद्देश्य

बच्चों, हम अक्सर भक्ति को आडंबरों के साथ जोड़ देते हैं | भगवान को प्राप्त करने के लिए हम व्रतों, जप-जाप्य का आश्रय लेते हैं, पर अपने-आप में छुपे हुए ईश्वर को पहचान नहीं पातें हैं क्योंकि हमने अपने आँखों पर अहंकार की पट्टी बाँधी होती है |

आडंबर और अहंकार से व्याप्त समाज को देखकर कबीर जी व्यथित हुए इसिलिए कबीर दास जी ने हमेशा ही समाज में व्याप्त बुराई को लक्ष्य किया | अपने दोहों के जरिए उन्होंने समाज प्रबोधन किया | कबीर जी के अनुसार ईश्वर प्राप्ति का सबसे आसान मार्ग है... अहंकार रहित समर्पण .....

जिस प्रकार बांसूरी अंदर पूर्ण रूप से खाली और खोखली होती है तभी वह सूर निकाल पाती है | उसी प्रकार अगर हमारा मन संपूर्ण रूप से खाली अर्थात अहंकार से रिक्त हो तभी ईश्वरी कृपा का अनुभव हमें हो सकता है |

बच्चों, अगर यही समर्पण का भाव समाज के हर व्यक्ति के पास है तो समाज में एकता के भाव बने रहेंगे|

T-9

मूल्यांकन

१. प्रेम की गली किस प्रकार की है ?

अ. सांकरी

आ. चौड़ी

इ. छोटी

ई. लंबी

2.घर में प्रवेश प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ेगा ?

अ. चप्पल उतारनी पड़ेगा

आ. अहंकार छोड़ना होगा

इ. स्नान करना पड़ेगा

ई. सजना पड़ेगा

3. प्रेम की खासियत क्या है ?

अ. प्रेम भेद-भाव नहीं मानता है

आ. प्रेम भेद-भाव मानता है

इ. प्रेम खेत में उगता है

ई. प्रेम सिर्फ अमीरों को मिलता है

४. स्वस्थ्य समाज को इनमें से किस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत है?

अ. पैसा

आ. प्रेम

इ. पानी

ई. पेड़

परियोजना कार्य:

- हमने कबीर के दोहों को पढ़ा, अब आपको कबीर के साथ-साथ तुलसीदास और सूरदास की रचनाओं को पढना है तथा ऊँ रचनाओं की विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखकर हमें भेजनी है | इन रचनाओं को आप www.kavitakosh.com इस संकेतस्थल पर प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए आपको निम्नलिखित पध्दति से कार्य करना होगा:-

पहले...www.kavitakosh.com इस संकेतस्थल पर जाएं

रचनाकारों की सूचि पर click करें

सूचि में से सूरदास तथा तुलसीदास के नामों को ढूँढ़ कर उनपर clickकरें तथा रचना पढ़ें|

याद रखने योग्य बात:- बच्चों रचनाकारों की सूचि वर्णमाला के अनुसार दी जाती है|

Worksheet:-

१. प्रेम की गली में एक साथ दो क्यों नहीं समा सकते हैं?
२. "मैं" द्वारा कबीरदास जी क्या कहना चाहते हैं?
३. प्रेम के घर में प्रवेश करने के लिए क्या करना पड़ता है?
४. प्रेम की क्या विशेषता है?
५. प्रस्तुत दोहों का वर्ण्य विषय क्या है?
६. आपके अनुसार "अहंकार" के क्या-क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं?
७. आपके अनुसार हमारे समाज को सशक्त करने के लिए क्या आवश्यक है? अपनी बात को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें|